

डॉ. डैनियल डार्को, जेल पत्र, सत्र 11, सुसमाचार के योग्य आचरण, फिलिप्पियों 1:26-2:5

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में हैं। यह सत्र 11 है, सुसमाचार के योग्य आचरण, फिलिप्पियों 1:26-2:5।

जेल पत्रों पर बाइबिल अध्ययन व्याख्यान में आपका स्वागत है। हम अब तक फिलिप्पियों पर विचार कर रहे थे।

यह बेहतरीन किताबों में से एक है। आपको फिलिप्पियों की किताब क्यों पसंद नहीं आएगी? मेरा मतलब है, यह एक ऐसी किताब है जिसमें पॉलिन के सभी पत्रों में से आपको खुशी, आनन्द जैसे शब्द मिलते हैं। मेरा मतलब है, ये सभी शब्द आपको स्नेह, प्यार, प्रशंसा, प्रभु की स्तुति, प्रभु के योग्य जीवन जीने का एहसास कराते हैं।

मुझे फिलिप्पियों का पत्र बहुत पसंद है। मुझे यह पत्र और भी अच्छा लगता है जब मैं इस तथ्य के बारे में सोचता हूँ कि यह पत्र एक प्रेरित द्वारा लिखा गया था जो जेल में था। वाह।

जेल से खुशी के बारे में सोचिए। वह एक चर्च को लिख रहा था जो अलग-अलग दबावों से गुजर रहा था और उसके बारे में चिंतित भी था। और जो व्यक्ति बुरी स्थिति में था, वह उन लोगों को प्रोत्साहित करने और सांत्वना देने वाला बन जाता है जो उसके लिए बुरा महसूस कर रहे हैं।

हमने अध्याय 1 में देखा कि पौलुस ने चर्चा को किस तरह से शुरू किया। अपनी प्रार्थना और धन्यवाद के बाद, वह सुसमाचार के बारे में बात करता है और कैसे सुसमाचार को जेल में नहीं रखा गया है क्योंकि वह जेल में था। यदि आपको पिछले व्याख्यान याद हैं, तो सुसमाचार आगे बढ़ रहा है।

दरअसल, यह इस हद तक बढ़ रहा है कि जेल के पहरेदार मसीह के बारे में सुन रहे हैं, और बाकी सभी लोग मसीह के बारे में सुन रहे हैं। पॉल ने हमें यह भी याद दिलाया कि अगर उसके पाठकों को लगता है कि सुसमाचार को नियंत्रित किया जा रहा है, तो उन्हें इस बारे में सोचना चाहिए। इसने अन्य विश्वासियों को यीशु के बारे में और अधिक बोलने के लिए प्रोत्साहित किया है।

और फिर आपको याद होगा, अगर आपने पिछले व्याख्यान को पढ़ा या याद किया है, तो ईर्ष्या और प्रतिद्वंद्विता से प्रेरित होकर प्रचार करने वालों पर हमारी चर्चा। आप जानते हैं, पॉल मुझे इस पर समझाता है। वह मुझे अपने दिल की खोज करने के लिए मजबूर करता है।

वह मुझे अलग-अलग संप्रदायों के लोगों के प्रति मेरे दृष्टिकोण के बारे में सोचने पर मजबूर करता है, जो लोग मसीह का प्रचार करते हैं लेकिन अलग-अलग तरीके से काम करते हैं। हमने पॉल के इस मजबूत कथन के साथ समापन किया: जीना मसीह है, मरना लाभ है। उनकी प्रार्थनाओं और यीशु मसीह की आत्मा की मदद के लिए उनका धन्यवाद।

अगले सत्र में, अध्याय 1, श्लोक 27 से अध्याय 2, श्लोक 18 तक, मैंने शीर्षक दिया है, सुसमाचार के योग्य जीवन का आचरण। थोड़ी देर में, हम श्लोक 27 से 30 को देखने जा रहे हैं, जहाँ पौलुस स्पष्टता से बताएगा कि सुसमाचार के अनुसार जीए गए जीवन के बारे में क्या जानना चाहिए। लेकिन साथ ही, आप यह भी जानना चाहते हैं कि इस प्रमुख शीर्षक के तहत, हम अध्याय 1, श्लोक 27 से 2, श्लोक 18 तक की चर्चा को चार भागों में विभाजित करेंगे।

तो चलिए मैं आपको यह बताता हूँ। आप जानते हैं, मैं आपको कुछ बातें बताना चाहता हूँ जिन्हें आप अपने दिमाग में रखना चाहते हैं। चलिए मैं आपको कुछ और बातें बताता हूँ।

सुसमाचार के योग्य जीवन जीने या आचरण के बारे में सोचें। सबसे पहले, शुरुआत आपको यह याद दिलाना है कि, वास्तव में, हम यहीं हैं। विरोध के बीच एकता और दृढ़ता।

फिर, हम नम्रता के माध्यम से एकजुटता के लिए अपील को देखेंगे। फिर, हम मसीह को उपयुक्त मॉडल के रूप में देखेंगे। और फिर, अध्याय 2 की आयत 18 तक अपनी चर्चा को समाप्त करते हुए, हम अंधकार की दुनिया में चमकने के लिए पौलुस की अपील को देखेंगे।

आइए अध्याय 1 की 27 से 30 आयतों को देखना शुरू करें। और मैंने पढ़ा, केवल तुम्हारा आचरण मसीह के सुसमाचार के योग्य हो। ताकि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूँ या न देखूँ, मैं तुम्हारे बारे में सुन सकता हूँ कि तुम एक आत्मा और एक मन से दृढ़ बने हुए हो, सुसमाचार के विश्वास के लिए कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष कर रहे हो, और अपने विरोधियों से किसी भी बात में भयभीत या भयभीत नहीं हो।

यह उनके लिए विनाश का स्पष्ट संकेत है, लेकिन तुम्हारे उद्धार का। और यह परमेश्वर की ओर से है, क्योंकि तुम्हें यह अनुमति दी गई है कि मसीह के लिए, तुम न केवल उस पर विश्वास करो, बल्कि उसके लिए दुख भी उठाओ। उसी संघर्ष में शामिल हो जाओ जिसे तुमने देखा कि मैं था और अब सुनो कि मैं अभी भी कर रहा हूँ।

इससे पहले कि हम इस अंश के कुछ विवरणों को देखें, मैं आपका ध्यान यहाँ की पहली पंक्ति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मेरे अंदर का पादरी काम कर रहा है। पहली पंक्ति कहती है, बस अपने जीवन के तरीके को मसीह के सुसमाचार के योग्य बनाओ।

मसीह के सुसमाचार के योग्य। यहाँ क्या हो रहा है? यहाँ यही हो रहा है। पॉल जो सुझाव दे रहा है वह यह है कि जीवन जीने का एक विशेष तरीका है जो उन लोगों से जुड़ा होना चाहिए जो मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानते हैं और स्वीकार करते हैं।

अपेक्षाएँ हैं, और यह कुछ ऐसा है जिसे पौलुस और उसके पाठक दोनों जानते हैं कि मसीह का अनुसरण करने वालों के लिए यह योग्य है। दूसरे शब्दों में, उन दोनों के पास आचरण का एक सहमत ढाँचा, एक ईसाई जीवन शैली और व्यवहार का एक तरीका है जो उन लोगों को प्रतिबिंबित करना चाहिए जो प्रभु यीशु मसीह के संपर्क में आए हैं। इसी आधार पर वह उनसे ऐसा जीवन जीने का आग्रह करता है जो योग्य है।

वह जीवन उन लोगों द्वारा नहीं जिया जाता जो दुर्भावना से प्रचार करते हैं। सुसमाचार के योग्य जीवन में एक विशिष्ट घटक होता है, इस हद तक कि दुख और विरोध के बीच भी, लोग अपना ध्यान मसीह पर बनाए रखते हैं ताकि उनका जीवन उसकी महिमा करे। मैं आपका ध्यान यहाँ पॉल द्वारा इस्तेमाल की गई भाषा की ओर भी आकर्षित करूँगा।

लेकिन आइए विरोध के बीच एकता और दृढ़ता पर नज़र डालें। पौलुस यहाँ खुद से ध्यान हटाकर श्रोताओं पर ध्यान केंद्रित करता है और उन्हें मसीही जीवन जीने के लिए चुनौती देता है।

उन्हें ऐसे नागरिकों की तरह आचरण करने का आदेश दिया गया है जिनका जीवन सुसमाचार के अनुरूप होना चाहिए। हमारे अंग्रेजी अनुवाद में आपको जो दिलचस्प बात नहीं मिलेगी वह है ग्रीक शब्द जिसका हम आचरण या जीवन जीने के तरीके के रूप में अनुवाद करते हैं। वास्तव में, ग्रीक शब्द का एक राजनीतिक अर्थ है।

ग्रीक शब्द का अर्थ है एक नागरिक द्वारा जीया जाने वाला जीवन - एक नागरिक की नागरिक जिम्मेदारी जो उसकी राष्ट्रीय पहचान के अनुकूल हो। मैं यह कहना पसंद करता हूँ कि जब हम विदेश में होते हैं, तो हम अमेरिकी होते हैं।

हम आज़ादी की धरती और बहादुरों के घर से हैं। हमें खोजबीन करना पसंद है। हम जेल में नहीं हैं।

हमें सोचना पसंद है। हमें सृजन करना पसंद है। अगर हम कड़ी मेहनत करें, भगवान की कृपा पर भरोसा करें और वही करें जो हमें उनकी कृपा से करना चाहिए, तो हम इस देश में ठीक रहेंगे।

यही अमेरिका है। यहाँ एक ऐसा जीवन जीया जाता है जो दर्शाता है कि हम कौन हैं। हम ऐसे नहीं जीते जैसे कि हम अपने चारों ओर हथकड़ी लगाकर कैद में हों, डर के मारे चलते और सिकुड़ते हुए।

वास्तव में, कभी-कभी मैं अमेरिका में हमारे आत्मविश्वास के उच्च स्तर के बारे में चिंतित हो जाता हूँ, जब हम उन चीजों को व्यक्त करते हैं जिनके बारे में हम वास्तव में बहुत कुछ नहीं जानते हैं। और मैं देखता हूँ कि मेरे ब्रिटिश मित्र इसे बहुत संदेह के साथ स्वीकार करते हैं। और मेरे लिए यह असामान्य नहीं है कि कोई ब्रिटिश व्यक्ति मेरे कुछ अमेरिकी सहकर्मियों की बातें सुनता और देखता है।

देखो, अपना सिर नीचे करो और थोड़ा सा खरोंचो। और मैं कहता हूँ, तुम ब्रिटिश, मैं जानता हूँ कि तुम कहाँ जा रहे हो। लेकिन चलो पॉल पर वापस आते हैं।

पॉल कहते हैं, स्वर्ग के नागरिक के रूप में, मसीह के अनुयायियों के रूप में, फिलिप्पी में रहने वाले लोगों के लिए राजनीतिक भाषा का उपयोग करते हुए। याद रखें, परिचय में, मैंने आपको बताया था कि यदि आप फिलिप्पी में रहते हैं, तो आपके पास वास्तव में दोहरी राष्ट्रीयता है। आपके पास ग्रीक नागरिकता है।

आपके पास रोमन नागरिकता है क्योंकि उस समय फिलिप्पी एक रोमन उपनिवेश था। उनकी नागरिकता पर बहुत गर्व है। पॉल उसी पर खेल रहा है।

पॉल ऐसी भाषा का इस्तेमाल करता है जो उन्हें याद दिलाती है कि उनकी नागरिकता रोमन नागरिकता या ग्रीक नागरिकता नहीं है। और अगर आप उस जीवन को देख रहे हैं जो उन्हें जीना चाहिए, तो यह ऐसा जीवन नहीं है जो रोमन नागरिकों को हराने के लिए जीया जाता है। यह ऐसा जीवन है जो मसीह के योग्य है।

स्वर्गीय नागरिकता। पॉल उन्हें चुनौती देता है। यह आवश्यक है कि वे खुद को नागरिकों की तरह आचरण करें, मसीह और उसके राज्य को पराजित करें।

इस तरह के आचरण से चर्च में एकजुटता का प्रमाण मिलना चाहिए। जिस तरह से वे खुद का आचरण करते हैं, उसमें एक आत्मा की उच्च डिग्री, जुड़ाव की भावना और दूसरे के साथ उनके रिश्ते की तरह का भाव झलकना चाहिए। और पॉल ने एक आत्मा शब्द का इस्तेमाल इस तरह से किया है जो मुझे बहुत पसंद है।

वह उन्हें एक आत्मा में दृढ़ रहने के लिए कहता है। हम उस शब्द पर वापस आएँगे। इसका क्या मतलब है? क्या इसका मतलब एक पवित्र आत्मा में है या संबंध के संदर्भ में एक आत्मा में? उन्हें एक मन या एक आत्मा रखने में सक्षम होना चाहिए।

ग्रीक शब्द का अनुवाद मन या आत्मा हो सकता है। उनकी मानसिकता एक होनी चाहिए। एक चर्च की कल्पना करें; पॉल कहते हैं कि आपकी आत्मा जुड़ी हुई और सहमत होनी चाहिए।

आपकी मानसिकता एक मानसिकता होनी चाहिए। आपके पास एक साझा ढांचा, संदर्भ का ढांचा और फोकस होना चाहिए। अगर मैं पॉल की भाषा में संक्षेप में बताऊँ, तो फोकस मसीह और क्रूस होगा।

उनके अनुसार, हमारी ईसाई नागरिकता ईसाई समुदाय के चरित्र को आकार देती है। और अगर ईसाई समुदाय जानता है कि ईसाई धर्म की नागरिकता क्या है, तो वास्तव में, इसका असर इस बात पर पड़ना चाहिए कि हम मसीह के शरीर में एक दूसरे के साथ कैसे संबंध रखते हैं। कहीं आप यह न सोचें कि पॉल बोस्टन के डाउनटाउन, न्यूयॉर्क शहर या लॉस एंजिल्स, अकरा या लंदन में, क्रोएशिया के ज़ाग्रेब या हंगरी के बुडापेस्ट में किसी बड़े चर्च का ज़िक्र कर रहा है।

नहीं, वह किसी बड़े चर्च की बात नहीं कर रहा है। वह यूरोप के सबसे बड़े चर्च की बात नहीं कर रहा है, चाहे आप लंदन की बात कर रहे हों या यूक्रेन की। हाउस चर्च के बारे में सोचिए।

जब वह उन्हें एक ही मानसिकता के साथ एक आत्मा में एकजुट होने की चुनौती देता है, तो वह यह नहीं कह रहा है कि आप केवल उन लोगों के साथ ऐसा करें जिनके साथ आप एक समूह से संबंधित हैं। आप उन सभी के साथ ऐसा करते हैं जो मसीह यीशु में विश्वास करते हैं। इसी भावना से पौलुस उन्हें भाई कह सकता था, भले ही वह रोम में था और वे फिलिप्पी में थे।

वह चाहता है कि वे एक ही विश्वास में सुसमाचार के लिए संघर्ष करें। वास्तव में, कभी-कभी इस शब्द का अनुवाद अलग-अलग अंग्रेज़ी बाइबलों में एक साथ किया जाता है। वाह।

पॉल चर्च से अपील करता है कि वह दुख में एकजुट रहे और डरने से इंकार करे। इसलिए जब वह पहली पंक्ति में कहता है, तो अपने जीवन के तरीके, अपने तरीके, अपने आचरण को सुसमाचार के योग्य होने दें, जो जीवन सुसमाचार के योग्य है वह ऐसा जीवन नहीं है जो विभाजन से भरा हो। बड़बड़ाना और कमज़ोर करना, सत्ता संघर्ष।

लेकिन एक ऐसा जीवन जो सुसमाचार के योग्य है, जब स्वर्ग के नागरिक एक ऐसा जीवन जी रहे हैं जो उनकी नागरिकता को दर्शाता है, वे एकता में काम करते हैं, वे साथी नागरिकों के साथ एक मानसिकता के साथ काम करते हैं। वे वास्तव में कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हैं। और जब दुख की बात आती है, तो वे वास्तव में किसी भी व्यक्ति को अकेले पीड़ित होने के लिए नहीं छोड़ते हैं।

वे साझा करते हैं, वे भाग लेते हैं, वे समर्थन करते हैं। वास्तव में, यह विशेष चर्च इसमें बहुत अच्छा था। वे पॉल का समर्थन करते रहे, यहाँ तक कि जब वह जेल में था।

और पौलुस अपने दूसरे पत्रों में उनके बारे में डींग मारता था। मसीह के सुसमाचार के लिए एकता। लेकिन जब पौलुस ने सुसमाचार शब्द का इस्तेमाल किया, तो वह किस बारे में बात कर रहा था? खैर, मैं आपको फिलिप्पियों पर अपनी टिप्पणी में बेन विदरिंगटन द्वारा दिया गया एक छोटा सा उद्धरण देता हूँ।

बेन विदरिंगटन लिखते हैं कि सुसमाचार मसीह की कहानी का पुनर्कथन है। और कहानी के पैटर्न को यीशु के अनुयायियों के जीवन पैटर्न के रूप में दोहराया जाना चाहिए। पॉल के लिए, सुसमाचार के इस क्षेत्र में स्पष्ट घटक हैं।

सुसमाचार यीशु मसीह और उनके क्रूस पर चढ़ने पर केंद्रित है, क्रूस पर उनके कार्य पर जो मसीह हमारे संसार में मेरे जैसे पापियों को बचाने के लिए करने आए हैं। और हमें यह समझना चाहिए कि मसीह में होने में कष्ट भी शामिल हो सकते हैं।

वैसे, मैं बातचीत के मुख्य विषय से एक कदम दूर जाकर आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि यीशु ने कभी भी हमें परेशानी-मुक्त ईसाई धर्म का वादा नहीं किया। यीशु ने कभी भी हमें कष्ट-मुक्त ईसाई धर्म का वादा नहीं किया। अगर आप कभी किसी उपदेशक या किसी और को यह कहते

हुए सुनते हैं कि आप ईसाई बन जाते हैं और आपको कभी कष्ट नहीं होता, तो उनसे अपनी बाइबल फिर से देखने के लिए कहें या उन्हें याद दिलाएँ कि आप जो कह रहे हैं वह बाइबल में नहीं है।

वास्तव में, मसीह का अनुसरण करने में मसीह का क्रूस उठाना और विभिन्न प्रकार की पीड़ाएँ शामिल हो सकती हैं। पॉल का कहना है कि जब ऐसा होता है, तो इसे एक साथ करें और उस संघर्ष से गुजरते समय एक-दूसरे का समर्थन करें। सुसमाचार और सुसमाचार के अनुसार जिया जाने वाला जीवन एक ऐसा जीवन है जिसमें यह सब शामिल है।

जब उन्होंने एक आत्मा कहा, तो मैंने कहा कि आपको उस विचार को थामे रखना चाहिए। उस शब्द को वास्तव में मानव आत्मा या पवित्र आत्मा के संदर्भ में समझा जा सकता है। आज भी विद्वानों में इस पर बहस चल रही है।

हम उस शब्द की व्याख्या कैसे करते हैं? क्योंकि जब आप कहते हैं कि यह पवित्र आत्मा में है, तो आप उस भाषा की ओर इशारा कर रहे हैं जिसका उपयोग पॉल ने कहीं और किया है जैसे कि पवित्र आत्मा में संगति या एकता की भावना जो पवित्र आत्मा की शक्ति से ऊर्जावान, सशक्त और प्रभावित होती है। इसलिए, यदि आप कहते हैं कि पॉल चर्च को एक योग्य जीवन जीने के लिए कह रहा है और आत्मा में एक होना चाहिए, तो आप कह रहे हैं कि वह उन्हें एकता में रहने, उद्देश्य में एकजुट होने, ऊर्जावान और प्रभावित होने, पवित्र आत्मा की शक्ति से प्रभावित होने के लिए कह रहा है। कुछ लोग तर्क देते हैं कि नहीं।

वास्तव में, पॉल इस पत्र में इस बात को नकारता नहीं है, लेकिन यहाँ, वह यह तर्क दे रहा है कि एक आत्मा में रहना एक सामान्य उद्देश्य के साथ जीना है। हमें लोगों के साथ जुड़ाव, उद्देश्य में एकता, भावना और मानसिकता की भावना रखने की आवश्यकता है, और हमें कहना चाहिए कि हम एक आत्मा में हैं। मैं अंग्रेजी शब्द एक सहमति का उपयोग करना पसंद करता हूँ।

कभी-कभी, मैं लोगों को यह बताने की कोशिश करता हूँ कि मसीह में एकमत होने का मतलब यह नहीं है कि आप तीन दोस्तों को ढूँढ़ लें जो मसीह के स्वामित्व वाली होंडा एकाईड में आपके साथ ड्राइव करें। नहीं। उस एकमत होने का मतलब है एक आत्मा में होना, एक समान उद्देश्य, साझा मिशन, साझा विश्वास और साझा आकांक्षाएँ होना।

हालाँकि, जिस तरह से हम इसे समझते हैं, यह पॉल द्वारा व्यक्त की जा रही बातों को नकारता नहीं है, और यह फिलिप्पियों के सामान्य धार्मिक ढाँचे को कमज़ोर नहीं करता है। यही कारण है कि मैं कहूँगा कि यह कोई बड़ी बात नहीं है। भले ही मैं यह कहने की अधिक संभावना रखता हूँ कि पाठ एक आत्मा के रूप में पढ़ा जा सकता है, मैं सामान्य उद्देश्य के संदर्भ में एक आत्मा के लिए बहुत खुला हूँ, लेकिन मैं उन लोगों के लिए भी बहुत खुला हूँ जो यह भी कहते हैं कि हमें इसे पवित्र आत्मा के संदर्भ में पढ़ना चाहिए।

मेरे विचार में, एक आत्मा भी आत्मा के कार्य में सक्रिय हो सकती है। यह आत्मा ही है जो हमें जोड़ती है। क्या आपको वे शास्त्र याद हैं? जब हमने मसीह यीशु पर विश्वास किया, तो परमेश्वर ने हमें अपनी आत्मा दी।

यह वह आत्मा है जो हमें एकजुट करती है। यह हमारा सामान्य डीएनए है। इसलिए, एक आत्मा में होना या एकमत होना, एक सामान्य उद्देश्य को साझा करना जरूरी नहीं है कि पवित्र आत्मा के कार्य का अर्थ या निषेध हो।

इस तरह, हमारे लिए अंग्रेजी में इसे समझाना आसान हो जाता है, अन्य भाषाओं के विपरीत जहाँ एक आत्मा के लिए शब्द, सामान्य उद्देश्य पवित्र आत्मा के संदर्भों से बहुत, बहुत अलग हो सकता है। विरोध में, पॉल कहते हैं कि यह सारी एकता उनके विरोध का सामना करने के तरीके में दिखाई देनी चाहिए। 28वें में विरोध अक्सर बहस का विषय बन कर सामने आया है।

हम जानते हैं कि पौलुस संभावित यहूदीवादियों का उल्लेख कर रहा है जो चर्च में मिशनरियों के रूप में आ सकते हैं और परेशानी खड़ी कर सकते हैं। लेकिन विरोधी कौन हैं? और मैं आपको याद दिला दूँ; शायद पद 28 में उसने उनसे कहा था कि वे अपने विरोधियों से किसी भी बात में न डरें। ये विरोधी कौन हैं? यही यहाँ मुख्य बात है।

ये विरोधी कौन हैं? क्या वे संभावित यहूदीवादी हैं? अब, हम अध्याय 3 में देखेंगे कि ये संभावित यहूदीवादी इतने बड़े विरोधी नहीं लगते। वे पौलुस के संदेश को विकृत करने के लिए आते हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि उनका एक आम विरोध यह है कि वे एक रोमन उपनिवेश में हैं।

पॉल रोमन जेल में है। उस पर रोमन व्यवस्था का दबाव है कि वह सुसमाचार से दूर रहे। तो, क्या यही बात यहाँ चल रही है? हम जानते हैं कि जब आप फिलिप्पियों को देखते हैं, तो पॉल किसी भी तरह से चर्च के खिलाफ चल रहे विरोध का सुझाव नहीं दे रहा है जो इतना गंभीर है।

तो, ऐसा लगता है कि जिस व्यवस्था की वे यहाँ बात कर रहे हैं, उसमें सूक्ष्म विरोध है। उन्होंने कहा कि ये विरोधी विनाश की राह पर हैं, यह सुझाव देते हुए कि वे गैर-ईसाई हैं। इसी भावना से मैं इस तर्क का विरोध करूँगा कि शायद वे इन यहूदी-केंद्रित मिशनरियों का उल्लेख कर रहे हैं जो आ सकते हैं।

मेरे विचार से, यह बहुत संभव है कि यहाँ विरोधी फिलिप्पी में मौजूद रोमन व्यवस्था का उल्लेख कर रहे हों। वह इसे इस तरह से कहते हैं। ऐसा लगता है कि बहुत संभव है, जैसा कि मैं उनसे सहमत हूँ, कि फिलिप्पी के रोमन नागरिक, जो हर सार्वजनिक सभा में सम्राट का सम्मान करते थे, फिलिप्पी के विश्वासियों पर विशेष दबाव डाल रहे थे।

कुरियोस के प्रति हो गई थी, जो प्रभु यीशु के लिए यूनानी शब्द है, जिसे स्वयं साम्राज्य के हाथों मार दिया गया था। वर्तमान संदर्भ जिसमें पॉल ने दावा किया है कि वे उसी संघर्ष से गुजर रहे हैं, जैसा कि वह हमें उस अंश के अंत में दिखाता है जिसमें वह अब साम्राज्य के कैदी के रूप में शामिल है, हमें ऐसा मानने का एक अच्छा कारण देता है। दूसरे शब्दों में, यदि आप भाषा के वाक्यांशों को देखें, तो ऐसा लगता है कि वे सभी इस रोमन व्यवस्था से गुजर रहे हैं, जो हर तरह का दबाव डाल रही है।

आपको याद होगा कि पिछले व्याख्यान में मैंने आपका ध्यान आरंभिक चर्च के मुख्य संघर्षों में से एक की ओर आकर्षित किया था, खास तौर पर सम्राट की पूजा के साथ, जिसमें अभिव्यक्ति थी कि कुरियोस कैसर, सीज़र प्रभु है, कुरियोस जीसस, या कुरियोस क्रिस्टोस, जीसस प्रभु है, या क्राइस्ट प्रभु है। बड़ा सवाल यह था कि क्या यह वही है जो यहाँ पृष्ठभूमि में चल रहा है? इतना दबाव है कि वे प्रभु के बारे में बात भी नहीं कर सकते थे, बिना किसी के यह कहे कि नहीं, हम जानते हैं कि तुम्हारा स्वामी कौन है। तुम्हारा स्वामी रोम में है, और यह एक रोमन उपनिवेश है।

यह संभव है कि इस विशेष परीक्षा की पृष्ठभूमि में उस तरह का दबाव हो। हम निश्चित रूप से ऐसा सोचते हैं, और मैं भी इस दृष्टिकोण से सहमत हूँ। यह बातचीत हमें अध्याय एक के अंत तक ले जाती है, जहाँ पौलुस ने कलीसिया को याद दिलाया है, चाहे दुर्भावना हो या संघर्ष और सब कुछ, कलीसिया को एकजुट रहना चाहिए और परमेश्वर के साथ अपने चलने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

और फिर, वह अध्याय दो पर आगे बढ़ेगा, और फिर अध्याय दो में, वह शुरुआत में यह लंबा वाक्य फेंकने जा रहा है और फिर अपील करेगा कि चर्च एकजुट रहे। याद रखें, वह पहले से ही एकता के बारे में बात कर रहा है, लेकिन अगर वे इसे नहीं समझ पा रहे हैं, तो वह इसे और भी पुख्ता करने जा रहा है। वह इस चर्च से प्यार करता है।

वह चाहता है कि कोई भी चीज उन्हें अलग न करे। उनका मन एक होना चाहिए। उन्हें एक-दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होना चाहिए।

उनमें एक भावना होनी चाहिए। और जब वे ऐसा करेंगे, तो वे वास्तव में विरोध के सामने एकता में खड़े होने के लिए एकदम सही स्थिति में होंगे। तो, अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो चलिए अध्याय दो को देखना शुरू करते हैं।

मैंने आपको शुरुआत में एक चार्ट दिया था जो हमें याद दिलाता है कि हम अध्याय एक से श्लोक 27, 27 से अध्याय दो, श्लोक 18 को सुसमाचार के योग्य आचरण पर एक व्यापक चर्चा के रूप में देख रहे थे। मैंने आपको यह भी याद दिलाया कि हम पहले भाग को देखेंगे, जिसे हमने विरोध के बीच एकता और दृढ़ता के रूप में देखते हुए समाप्त किया है। अध्याय दो, श्लोक एक से चार, जिसे हम कुछ ही मिनटों में कवर करेंगे, वास्तव में विनम्रता के माध्यम से एकता के लिए एक अपील है।

और यही वह है जिसे हम अब कवर करेंगे। वहाँ से, हम सुसमाचार के योग्य आचरण पर इस विखंडन के तीसरे और चौथे भाग में जाएँगे। इसलिए, क्योंकि हम अध्याय दो को देखने जा रहे हैं, आइए हम आपको याद दिलाने के लिए शुरुआत में एक सितारा लगाते हैं कि हम विनम्रता के माध्यम से एकता के लिए अपील देख रहे हैं।

नम्रता के ज़रिए एकता की अपील करें। आइए कुछ अवलोकन करें। जब हम इस परीक्षण को देखते हैं, तो अगर आपके पास बाइबल है, तो आप उसे अपने सामने खोल सकते हैं।

मैं ESV पढ़ने जा रहा हूँ। और जब मैं इसे पढ़ता हूँ, तो मैं आयत एक से चार तक ध्यान से पढ़ता हूँ। इसलिए, यदि मसीह में कोई प्रोत्साहन है, प्रेम से कोई सांत्वना है, आत्मा में कोई भागीदारी है, कोई स्नेह और सहानुभूति है, तो एक ही मन, एक ही प्रेम, पूर्ण सहमति और एक मन होकर मेरे आनंद को पूरा करें।

स्वार्थी महत्वाकांक्षा या अहंकार से कुछ भी न करें, बल्कि विनम्रता से दूसरों को खुद से ज़्यादा महत्वपूर्ण समझें। आप में से हर कोई न केवल अपने हित के बारे में सोचे बल्कि दूसरों के हित के बारे में भी सोचे। आइए कुछ त्वरित अवलोकन करें क्योंकि अंग्रेजी अनुवादों से हमें जो बात समझने में मदद नहीं मिलती है, वह यह है कि हालांकि अध्याय दो की शुरुआत उस चीज से होती है जिसे हम सशर्त वाक्य कहते हैं, जब मैं अंग्रेजी पढ़ रहा था, तो यह एक ऐसी चीज थी जिसे मेरे प्रोफेसर, मेरे शिक्षक मुझे बताते थे कि यह अगर खंड है।

ठीक है। तो हम ग्रीक में जिसे सशर्त खंड कहते हैं, और जहाँ हम if पाते हैं, वह लगभग एक शर्त को व्यक्त करता है, लेकिन यह हमेशा ऐसा नहीं होता है। कभी-कभी, if खंड किसी तरह की शर्त या अनिश्चितता को स्पष्ट नहीं करता है।

वास्तव में, यदि इस अर्थ में, इसे ग्रीक स्थिति में वाक्यांश को एक साथ रखने के तरीके से अनुवादित किया जाना चाहिए, तो इसका मतलब संदेह नहीं है। इसलिए, जब आप अपनी अंग्रेजी बाइबिल में पढ़ते हैं, अगर कोई प्रोत्साहन या सांत्वना है, तो आप आश्चर्य नहीं करते हैं, ओह, क्या वास्तव में सांत्वना है? क्या वास्तव में प्रोत्साहन है? क्या पॉल यही कहने की कोशिश कर रहा है कि चूंकि प्रोत्साहन है और चूंकि सांत्वना है, इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप इस पर पूरा ध्यान दें। दूसरी बात जिस पर मैं चाहता हूँ कि आप इस विशेष अंश में ध्यान दें, वह यह तथ्य है कि यह ग्रीक में एक वाक्य है।

वाह। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि मैं इन चार आयतों को अपने अजीब अप्रीकी लहजे में बिना सांस लिए आपको पढ़ने की कोशिश कर रहा हूँ? क्या आप इसे समझ सकते हैं? ये वो चीजें हैं जिन्हें मैं पॉल की बेदम अभिव्यक्तियाँ, लंबे वाक्य कहना पसंद करता हूँ। लेकिन आइए इसे थोड़ा और करीब से देखना शुरू करें।

पद एक से चार में पौलुस क्या कह रहा है? क्या उसके आनंद को पूर्ण करेगा? एकता के लिए आधार क्या है और उसके आनंद को उस पूर्णता तक लाने का साधन क्या है? मैं इसे एक अच्छे कटोरे की तरह देखना पसंद करता हूँ जिसे हम महसूस करने जा रहे हैं, और जब हम महसूस करते हैं, तो हम पौलुस के आनंद को पूर्ण बनाते हैं। सबसे पहले, वह कहता है, अगर कोई सांत्वना है, अगर कोई प्रोत्साहन है, वास्तव में, चूंकि सांत्वना है, तो मैं इसका अनुवाद इस तरह करूँगा। चूंकि मसीह में प्रोत्साहन है और विश्वास के समुदाय के बीच समर्थन है, मैं उसे टोकरी में रखता हूँ क्योंकि यह मेरे आनंद को पूर्ण करने जा रहा है।

मसीह में वह प्रोत्साहन चर्च में जारी रहना चाहिए। आप पूछ रहे होंगे कि पॉल एकता के प्रति इतना जुनूनी क्यों है? खैर, यह पूछने के लिए आपका धन्यवाद। समुदाय में एकता ही वह सब कुछ है जो समुदाय को ठीक से काम करने के लिए होना चाहिए।

एकता के बिना समुदाय विनाशकारी या विनाशकारी हो सकता है। पॉल के लिए, चर्च को एक साथ रहने की जरूरत है। इसलिए, इस तथ्य का मतलब यह नहीं है कि उसने अध्याय एक की आयत 27 से 30 तक एकता के बारे में बात की, इसका मतलब यह नहीं है कि उसे इसके बारे में और बात नहीं करनी चाहिए।

नहीं, ये उसके दोस्त हैं। उसे सच में चिंता है कि चर्च एकजुट हो और साथ मिलकर काम करे, और इसलिए मसीह में उस प्रोत्साहन के बाद से, उन्हें इसे जीवित रखना चाहिए। अगर प्यार में सांत्वना है, क्योंकि प्यार में सांत्वना है, ध्यान दें कि इस लंबे वाक्य के अंत में, पॉल दूसरों की रुचि की तलाश करने की क्षमता के बारे में बात करेगा।

तो, यहाँ अर्थ और जिस भाषा का वह उपयोग कर रहे हैं वह एक ऐसी भाषा है जो भीतर से गहरा, गहरा स्नेह है। अगापे प्रेम, वह प्रेम जो लोगों में होना चाहिए, बिना शर्त का होना चाहिए। यह सब मेरे बारे में नहीं है।

मैंने अमेरिका में यह दिलचस्प अभिव्यक्ति सीखी, जो मुझे लगा कि पॉल जो नहीं चाहता है उसे सबसे अच्छी तरह से समझाती है। वे मुझे, मैं, और खुद को या कुछ इसी तरह कहते हैं, जहाँ जोर मुझे, मुझे, मुझे पर होता है। मैं इसे मी-इज्म का दर्शन कहता हूँ।

पॉल यहाँ जिस प्रेम की बात कर रहे हैं वह आत्म-त्याग करने वाला प्रेम है। यह त्यागपूर्ण प्रेम है। यह प्रेम हृदय की ईमानदारी से आता है, और वह कहते हैं, चूँकि प्रेम की सांत्वना है, या यदि प्रेम की सांत्वना है, जैसा कि मैं जानता हूँ, तो उसे मेरी दराज में भरने के लिए एक टोकरी में रख दो।

वह आगे कहते हैं, चूँकि आत्मा की संगति है, आत्मा के जुनून को पहले ही समझाते हुए, आपको याद होगा कि मैं यह सवाल पूछ रहा था कि क्या इस शब्द आत्मा का अर्थ पवित्र आत्मा है, या व्यक्तियों की आत्मा, सामान्य उद्देश्य। यहाँ, इस बात पर कोई बहस नहीं है कि यह पवित्र आत्मा को संदर्भित करता है। यदि आत्मा की संगति, कोइनोनिया है, तो आप जानते हैं, यह पॉल ही है जिसने 2 कुरिन्थियों में लिखा है, हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा, ईश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की संगति हमारे साथ हो।

यह पॉल ही है जो समझता है कि पवित्र आत्मा में कुछ ऐसा है जो परमेश्वर के लोगों को एक साथ ला सकता है, वे लोग जिन्होंने मसीह में विश्वास साझा किया है; आत्मा उनके जीवन में काम करने में सक्षम है। यह पॉल ही है जो वास्तव में हमें बताता है कि जब आत्मा वास्तव में हमारे अंदर काम करती है, तो यह हमें उन गुणों को जन्म देने में मदद करती है, जिन्हें गैलाटियन्स में, उसने आत्मा का फल कहा है, और प्रेम उनमें से एक है। इसलिए, यदि या जब आत्मा में भागीदारी है, तो इसे बनाए रखें, और पॉल के आनंद को पूरा होने दें।

और चौथी बात जो वह यहाँ बताते हैं वह है कोमल हृदय और सहानुभूति। इन दोनों को संयोजक अंत से जोड़ते हुए, कोमल हृदय, जिद्दी हृदय के विपरीत, कठोर हृदय के विपरीत। एक हृदय जो इतना कोमल हो कि कोई दूसरे व्यक्ति के साथ सहानुभूति रख सके।

तुम्हें पता है, मुझे तुमसे यह कबूल करना होगा, मैं एक मर्दाना मर्द हुआ करता था। मैं रो नहीं सकता था। मैं एक ऐसा व्यक्ति था जो कठोर था क्योंकि मैं एक ऐसी संस्कृति में बड़ा हुआ था जहाँ पुरुष रोते नहीं हैं; पुरुषों को बहुत, बहुत मजबूत होना पड़ता है।

और इसलिए, मुझे एहसास हुआ कि जब लोग वास्तव में भावनात्मक संघर्ष से गुज़र रहे होते हैं, तो उन्हें समझने की कोशिश में, मैं तर्क-वितर्क करता हूँ। और मुझे आपको बताना चाहिए कि इसे बदलने के लिए मेरे साथ क्या हुआ। मैं यूरोप में पढ़ रहा था।

सैन्य अस्पताल में सबसे अच्छा इलाज मिलता है।

मुझे अपने पिता के स्वास्थ्य के बारे में कम चिंता है क्योंकि मुझे पता है कि वे ठीक हो जाएंगे। जब मेरे खाते में केवल 100 डॉलर थे, तब मुझे एक कूरियर मेल मिला जिसमें बताया गया था कि मेरे पिता का निधन हो गया है। मैं घाना वापस नहीं जा सका।

मैं कंगाल हो चुका था। मैं क्रोएशिया के ओसिजेक शहर में उस भाग्यशाली दोपहर को ड्रावा नामक नदी के किनारे टहलने निकला। जब मैं ड्रावा नदी के किनारे टहल रहा था, तो मेरी नज़र एक बेंच पर पड़ी और मैं उस बेंच पर बैठ गया।

अचानक, अचानक, यह आदमी, यह जिद्दी, कठोर दिल वाला आदमी, मेरे पिता के बारे में सोचते हुए, एक स्वर्गीय पिता के बारे में विचार, जो वहाँ होगा, जो मेरे साथ होगा, यहाँ तक कि जब मैं अपने सांसारिक पिता के लिए शोक मना रहा था, मेरे दिमाग में आया। मैंने प्रभु की प्रार्थना के बारे में सोचा, और मैं टूट गया। उस दुर्भाग्यपूर्ण दोपहर को, मैं एक बच्चे की तरह 30 मिनट तक रोता रहा, बस रोता रहा।

ऐसा लगता है जैसे मैंने इतने सालों तक जो आँसू रोके रखे थे, जब मैं एक मजबूत, जिद्दी, कठोर दिल वाला इंसान बनने की कोशिश कर रहा था, वे सब उस दिन मेरे अंदर से निकल रहे थे। मुझे पता था कि उस दिन कुछ हुआ था। भगवान ने मुझे कोमलता सिखाने के लिए मेरे पिता की मृत्यु का इंतज़ार किया।

हां, हमने अंतिम संस्कार की गतिविधियां कीं। मैं घर वापस नहीं जा सका। हां, मैंने उससे जुड़ी कठिनाइयों का सामना किया।

लेकिन तब से उन आँसुओं में डूबकर, मुझे एहसास हुआ कि मैं अपने क्रोएशियाई दोस्तों के साथ सहानुभूति रख सकता हूँ जिन्होंने युद्ध में अपने प्रियजनों को खो दिया है। मैं उनके दर्द को तब भी महसूस कर सकता था जब वे बात करते थे। कभी-कभी, मैं उन किशोरों के साथ रो सकता था जब वे युद्ध के दौरान हुई कठिनाइयों के बारे में बताते थे।

मैं बदल गया था। मेरे पास नया दिल था। पॉल ने कहा कि चूँकि कोमलता, कोमल दया और सहानुभूति है, इसलिए यह आपको दूसरे व्यक्ति से जुड़ने, सहानुभूति रखने और वास्तव में उनकी भावनाओं से जुड़ने में मदद करता है।

अगर वे इसे जीवित रखते हैं, तो वे उसकी खुशी पूरी कर देंगे। वाह। 1997 के उस भाग्यशाली दिन के बाद से, मैं एक बदला हुआ इंसान बन गया हूँ।

मैं कब्र के पास जाकर वचनबद्धताएं व्यक्त करते समय खुद को रोक नहीं पाया हूँ। मैं उन दोस्तों के साथ रो पाया हूँ जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। मैं अपने बच्चों के सामने आंसू बहा पाया हूँ जब दोस्त मुश्किल समय से गुजर रहे होते हैं।

मैं जुड़ता हूँ। मैं समझ सकता हूँ। मेरा भावनात्मक जुड़ाव और संबंध बढ़ रहा है, और मुझे एहसास है कि जब पॉल ने कहा, कोमल दया और सहानुभूति को सक्रिय होने दें, या चूंकि ये गुण चर्च में सक्रिय हैं, या यदि आप उन्हें सक्रिय बना सकते हैं, जैसा कि मैं जानता हूँ कि यह पहले से ही है, तो इसे स्थापित होने दें।

यह समुदाय के लिए अच्छा है। यह चर्च की एकता के लिए अच्छा है। और मुझे यह पसंद आया कि ब्रिटिश विद्वान एफएफ ब्रूस ने इसे कैसे समझाया।

यह आत्मा ही है जो मसीह के शरीर में उनके सामान्य जीवन को बनाए रखती है। सामान्य जीवन का प्रभाव कोमल और दयालु हृदय होना चाहिए। लेकिन ये कोमलता और करुणा, सबसे पहले, मसीह की अपनी हैं।

उन्होंने उसकी कोमलता और करुणा का अनुभव किया है और इसलिए, वे एक-दूसरे के प्रति अधिक तत्परता से वही गुण दिखा सकते हैं। पद 2 में, पौलुस इस एकता से उत्पन्न होने वाले कुछ विशिष्ट तत्वों पर प्रकाश डालता है। एक ही मन।

और मैंने पढ़ा, मेरी खुशी को एक ही सोच के होकर पूरा करो। वाह। एक जैसा सोचकर, एक जैसी मानसिकता रखकर, खुद को अनावश्यक असहमति और अनावश्यक विवादों में डालकर।

एक ही मन होना। एक ही प्रेम होना। या एक ही प्रेम होना।

जो ईसाई नहीं चाहते, उनसे प्रेम न करें, प्रेम करने की आवश्यकता नहीं है। उन चीजों से प्रेम करें जिनसे मसीह प्रेम करते हैं और उन लोगों से प्रेम करें जिनसे मसीह प्रेम करते हैं। वही प्रेम रखें।

ऐसा करो ताकि मेरा आनंद पूरा हो जाए। और वह आगे कहता है, जैसा कि मैं पढ़ूंगा, पूर्ण सहमति और एक मन से रहो। वास्तव में, ग्रीक शब्द का अनुवाद वास्तव में आत्मा साथी के रूप में किया जा सकता है।

कक्षा में, मैंने छात्रों को यह याद दिलाने की कोशिश की है कि मैंने आधुनिक दिनों में हमारे पश्चिमी अध्ययनों में क्या देखा है, ताकि बाइबल को समलैंगिक संबंधों के बारे में बताया जा सके जहाँ भी लोग इसे पा सकें। वास्तव में, ग्रीक शब्द एक मिश्रित शब्द है जो वास्तव में एक ही मन या जुड़ी हुई आत्मा का अर्थ है।

लेकिन यह सुझाव नहीं दे रहा है कि वे समलैंगिक हैं या लोग इस अर्थ में समलैंगिक बन जाते हैं। यदि आप समलैंगिकता के बारे में पॉल के दृष्टिकोण को जानना चाहते हैं, तो यह स्पष्ट है। रोमियों अध्याय 1 पढ़ें, 1 तीमुथियुस पढ़ें, और 1 कुरिन्थियों 6 पढ़ें। ये वहाँ के विषय हैं।

यहाँ, पौलुस सच्चे स्नेह, एकता और सद्भाव की बात कर रहा है, न कि विश्वास के समुदाय में मतभेद की। और फिर, पद 3 और पद 4 में, वह हमें कुछ संभावित समस्याओं की याद दिलाएगा जो एकता को कमजोर कर सकती हैं। और इसलिए, आप इसे इस तरह से कहते हैं: स्वार्थी महत्वाकांक्षा से बाहर कुछ भी न करें।

ऐसा मत करो, क्योंकि अगर तुम ऐसा करोगे, तो तुम मसीह के शरीर में एकता को कमजोर कर दोगे। व्यर्थ के अहंकार से कुछ मत करो, लेकिन घमंड, अहंकार, अहंकार से कुछ मत करो। यह उन शब्दों में से एक है। जब मैं अंग्रेजी सीखता हूँ, तो मुझे शब्द, घमंड पसंद आता है।

यह एक बड़ा शब्द है। मैं चाहता था कि मेरे दोस्त जानें कि मैं एक नया शब्द जानता हूँ। अब, जब मैं अमेरिका में हूँ, और मैं अंग्रेजी बोलने वाली दुनिया में हूँ, तो हर कोई इसे जानता है, इसलिए अब इसे बोलना भी अच्छा नहीं लगता।

घमंडी होना, खुद को दूसरों से ऊपर समझना, जिसे मैं शुतुरमुर्ग की गर्दन कहता हूँ, और खुद से कहना, मैं सिर ऊँचा करके बना हूँ, किसी को भी नीचा दिखाने के लिए, और मैं शुतुरमुर्ग बनने के लिए अपनी प्राकृतिक क्षमताओं का प्रयोग कर रहा हूँ। नहीं, अहंकार से कुछ भी मत करो, पॉल कहते हैं, क्योंकि सोचो क्या? ऐसा करने से, आप समुदाय में भाईचारे को कमजोर करते हैं। पॉल कहते हैं, केवल अपने निजी हित के बारे में मत सोचो।

नहीं, लेकिन अगर आप इस अभिव्यक्ति को देखें, तो यह देखना बहुत दिलचस्प है कि पौलुस इसे कैसे व्यक्त करता है। पद चार, तुम में से हर एक को सिर्फ अपने हित की नहीं बल्कि दूसरों के हित की भी चिंता करनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, अपने हित की नहीं बल्कि दूसरों के हित की चिंता करो।

वह यह नहीं कह रहा है कि दूसरों के हितों को देखो और अपने हितों की उपेक्षा करो। नहीं, दूसरों के हितों को उसी तरह से देखो जैसे तुम अपने हितों को देखते हो। पॉल मसीहाई जटिलता की कोई अजीब झूठी भावना पैदा करने की कोशिश नहीं कर रहा है, जो कहती है, मैं सिर्फ लोगों को बचाने जा रहा हूँ, मैं सिर्फ लोगों की मदद करने जा रहा हूँ, और जब तुम ऐसा करते हो, तो तुम खुद अपनी भलाई, अपने कल्याण और भगवान में अपनी दृढ़ स्थिति की तलाश नहीं कर रहे हो, और यह सब इस बारे में है, ओह, मैं सिर्फ दूसरों के हितों को देख रहा हूँ, और भले ही मैं दुर्घटनाग्रस्त हो रहा हूँ, और वह सब, यह नहीं है।

सिर्फ अपने निजी हित के बारे में ही नहीं बल्कि दूसरों के हित के बारे में भी सोचें। इस तरह, एकता, प्रेम और रिश्ते की सच्ची भावना विकसित की जा सकती है और समुदाय को समृद्ध बनाया जा सकता है। अगर आपको याद हो कि पहले अध्याय में पौलुस ने उन प्रचारकों के बारे में

इसी तरह की भाषा का इस्तेमाल किया था, तो आइए इसकी तुलना पौलुस द्वारा कही गई बातों से करें।

आइए तुलना करें। जैसा कि आप स्क्रीन पर देखते हैं, आप देखेंगे कि यहाँ अध्याय एक में श्लोक 15 और 17 से, कुछ लोग वास्तव में ईर्ष्या और प्रतिद्वंद्विता से मसीह का प्रचार करते हैं। अध्याय दो, श्लोक तीन और चार, स्वार्थी महत्वाकांक्षा से कुछ नहीं करते हैं।

उस स्वार्थी महत्वाकांक्षा को देखिए। पॉल कहते हैं कि यह नहीं, नहीं है। दूसरे शब्दों में, जब वह कहता है, मैं उन्हें भाई कहता हूँ, जब वह कहता है कि वे मसीह का प्रचार करते हैं, तो वह यह नहीं कह रहा है कि वह स्वार्थी महत्वाकांक्षा की खोज को बढ़ावा देता है।

नहीं, वह कहता है, ऐसा तुम्हारे बीच में नहीं होना चाहिए या अहंकार नहीं होना चाहिए। लेकिन, नम्रता से, दूसरों को अपने से ज़्यादा महत्वपूर्ण समझो। तुम में से हर एक को सिर्फ़ अपने हित की नहीं, बल्कि दूसरों के हित की भी चिंता करनी चाहिए।

वाह। पॉल के साथ यहाँ जो कुछ हो रहा है, उसे देखना बहुत ही दिलचस्प है। उसे यह सब कहाँ से मिल रहा है? शायद यही समय है कि मैं आपको कुछ बताऊँ।

आप वापस जाकर फिलिप्पियों के अध्याय एक, श्लोक एक को पढ़ना शुरू करें और जहाँ भी आपको मसीह मिले, वहाँ मसीह शब्द को रेखांकित करें। अगर यह आपकी अपनी बाइबल नहीं है, तो कृपया ऐसा न करें क्योंकि यह बदसूरत लगने लगेगा। आप देखेंगे कि मसीह हर जगह मौजूद है।

इसलिए, पॉल आपको यह बताने जा रहा है कि यदि आप मसीह को रेखांकित करना चाहते हैं, तो ऐसा करना आपके लिए सही है, क्योंकि, पाँचवें पद से, वह कहेगा, जो मसीह यीशु में तुम्हारा है, या मसीह का वही मन तुम्हारा हो। इसलिए, अब वह इस में मसीह के बारे में बात कर रहा है, उसमें मसीह के बारे में, लेकिन अब वह कहने जा रहा है, देखो, मैं चाहता हूँ कि तुम मसीह को देखो। शायद एक मॉडल के रूप में, और मैं इसे कुछ मिनटों में समझाऊँगा।

फिर वह हमें वह देगा जिसे हम क्राइस्टोलॉजिकल भजन कहते हैं, जिस पर हम विचार करेंगे, और मैं इसकी जटिलता को समझाना चाहूँगा और हम इनमें से कुछ चीजों को कैसे संदर्भित करते हैं और विद्वानों द्वारा इनमें से कुछ चीजों के बारे में कही गई सभी अजीब बातें, क्योंकि, हाँ, क्योंकि हम विद्वान हैं, और क्योंकि हमें जीविका के लिए अटकलें लगानी पड़ती हैं, और कभी-कभी, हम लोगों को ईश्वर के साथ उनके कार्य में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं, जिसे हमारा वास्तविक कार्य माना जाता है। इसलिए, मैं आपको इस विषय पर कुछ विद्वानों की अटकलों की याद दिलाऊँगा, लेकिन समझें कि मसीह को एक मॉडल के रूप में देखा जाएगा। मैंने आपको पहले जो चार पूर्ण मॉडल दिए थे, उन्हें फिर से दोहराते हुए, आप महसूस करना शुरू करते हैं कि हमने अभी विनम्रता के माध्यम से एकता की अपील, अध्याय दो, श्लोक एक से चार को देखा है।

अगले व्याख्यान में, हम अध्याय तीन, अध्याय दो, श्लोक पांच से 11 तक देखेंगे। मसीह एक उपयुक्त मॉडल के रूप में। लेकिन इससे पहले कि हम उस पर व्यापक चर्चा करें, यह आपको दिलचस्प लग सकता है कि श्लोक पांच बातचीत में एक बहुत ही महत्वपूर्ण श्लोक है, और शायद, समय की अनुमति होने पर, मैं आपके साथ श्लोक पांच के कुछ तत्वों पर चर्चा करना चाहूंगा, लेकिन अगर समय की अनुमति नहीं है, तो मैं आपको केवल एक व्यापक तस्वीर दे दूंगा कि हम क्या देखेंगे।

तो, आइए हम इसे पाँचवें पद से देखें। पाँचवें पद से, आप समझना शुरू करते हैं कि हम, विशेष रूप से छठे पद से, पहले से मौजूद मसीह को देखने जा रहे हैं। सातवें से आठवें पद तक, हम देहधारी मसीह को देखेंगे।

श्लोक नौ से 11 तक, हम मसीह के महिमामंडन को देखेंगे। और अरे, मैं तुम्हें कुछ दिखाता हूँ। मुझे इससे कुछ बनाना पसंद है, और सोचो मैं क्या बनाऊँगा? क्रूस पर मसीह।

तो, हम इस भजन को देखेंगे जो मसीह पर केंद्रित है। वैसे, मैं एक धर्मशास्त्री हूँ, मैं नास्तिक नहीं हूँ। कभी-कभी, मैं कोशिश करता हूँ।

मेरे छात्र मुझे याद दिलाते हैं कि मैं एक कलाकार के तौर पर क्या करता हूँ और क्या नहीं करता। हाँ, मैं सहमत हूँ। लेकिन अगर मैं क्रूस पर मसीह को पा सकता हूँ, तो यह ठीक है।

अतः, पद पाँच से पद 11 तक, हम इस प्रकार पढ़ेंगे। जो मन मसीह यीशु में है, वही मन आपस में रखो। जो परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।

परन्तु दास का स्वरूप धारण करके, मनुष्य की समानता में जन्म लेकर, और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर, अपने आप को दीन किया और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इसलिए परमेश्वर ने उसे बहुत ऊंचा किया है। परमेश्वर ने उसे बहुत ऊंचा किया है और उसे वह नाम दिया है जो सब नामों से श्रेष्ठ है।

ताकि यीशु के नाम पर स्वर्ग और पृथ्वी पर हर घुटना झुक जाए और हर जीभ यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह परमेश्वर पिता की महिमा के लिए प्रभु है। हमने अभी देखा कि कैसे पौलुस विरोध के सामने कलीसिया को एकजुट करने की कोशिश करता है, उन्हें एक मानसिकता के लिए बुलाता है, मसीह की आत्मा में रहता है, और उस संगति को बनाए रखता है जो महत्वपूर्ण है क्योंकि वे उस भाग्य को भुगतते हैं जो वह खुद अध्याय एक के अंत में रोम में भुगत रहा है। अध्याय दो, मैंने आपको अध्याय दो की शुरुआत से याद दिलाया कि कैसे पौलुस वास्तव में अध्याय दो के इस लंबे वाक्य को लिखता है, एक से चार आयतों को ग्रीक में सशर्त खंडों में, उन्हें उस तरह के रवैये और गुणों के साथ चुनौती देता है जो उसके आनंद को पूर्ण बनाएंगे, एकता की आवश्यकता को रेखांकित करेंगे।

एकजुट होकर हम निर्माण करते हैं; विभाजित होकर हम गिरते हैं। यदि दुनिया मसीह को काम करते हुए देखना चाहती है तो ईसाई समुदाय आवश्यक है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में जाकर देखें।

जब ईसाई एक जगह पर एकजुट होते हैं तो महान चीजें होती हैं। चाहे वे प्रार्थना कर रहे हों, बाइबल अध्ययन और संगति कर रहे हों, या रोटी तोड़ रहे हों, खैर, बहुत सारी अद्भुत चीजें होती हैं। मसीह के शरीर में इस एकता को पैदा करना शैतान का एजेंडा है।

फिलिप्पियों में, जब पौलुस जेल में था, तब भी वह चाहता था कि कलीसिया एक हो। और शायद, बस शायद, हम भी इसे अपनी महत्वाकांक्षा बना लें, अपने स्वार्थी हित की तलाश न करें, बल्कि स्वर्ग के सच्चे नागरिकों के गुणों का पीछा करें और उन लोगों के लिए आचरण या आचरण का अनुकरण करें जो मसीह यीशु को प्रभु के रूप में पुकारते हैं। ऐसा करने से, हम अपने पिता को जो स्वर्ग में है, सम्मान दिलाएँगे, और दुनिया मसीह को मसीह के समुदाय में देखेगी।

हमारे साथ इन अध्ययनों को जारी रखने के लिए फिर से धन्यवाद। मुझे उम्मीद है कि आप भी मेरी तरह सीख रहे होंगे और आगे बढ़ रहे होंगे। मुझे उम्मीद है कि भगवान उन चीजों पर प्रकाश डाल रहे हैं जिनके बारे में मैं इस अंश में बात भी नहीं कर रहा हूँ।

और मैं प्रार्थना करता हूँ और आशा करता हूँ कि हम साथ मिलकर ऐसे इंजीनियर बनेंगे जिनका उपयोग परमेश्वर उन लोगों को एकजुट करने के लिए करेगा जो मसीह यीशु में विश्वास रखते हैं। एक बार फिर धन्यवाद, और परमेश्वर आपको आशीर्वाद दे।

यह डॉ. डैन डार्को द्वारा जेल पत्रों पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 11 है, सुसमाचार के योग्य आचरण, फिलिप्पियों 1:26-2:5।